शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

पंकज बिष्ट के लेखन में प्रतिबिंबित उनका परिवेश: एक अवलोकन

अमिता प्रकाश

सहा0 अध्यापिका,
रा0बा0इ0 कालेज, द्वाराहाट, अल्मोड़ा

www.shodh.net

पंकज बिष्ट के लेखन में प्रतिबिंबित उनका परिवेश: एक अवलोकन

विषय संकेत:- *पंकज बिष्ट और उनका परिवेश, पंकज बिष्ट का लेखन, हिन्दी साहित्य*

किसी रचनाकार की रचनागत इमानदारी इस बात में निहित है कि वह अपने परिवेश के प्रति संवेदनशील हो। किसी रचनाकार की रचनाओं में अभिव्यक्त परिवेश से न केवल रचनाकार के व्यक्तित्व को समग्रता में समझा जा सकता है, वरन उसके मूल्यों के प्रति निष्ठा, रचनात्मक विवेक और संवदेनात्मक इमानदारी का मूल्यांकन किया जा सकता है। इस शोध अध्ययन में पंकज बिष्ट की रचनाओं में अभिव्यक्त परिवेश के माध्यम से उक्त गवेषणा की आकांक्षा जुड़ी है।

साहित्यकार के आत्मतत्त्व की महत्ता का प्रतिबिम्ब ही साहित्य का औदात्य है। वास्तविक वाग्वैदग्ध्य उन्हीं में पाया जा सकता है जिनकी चेतना व्यापक और उदार हो। जो लोग जीवन भर क्षुद्र उद्देश्यों और संकीर्ण स्वार्थो के पीछे पड़े रहते हैं वे मानवता को स्थाई महत्त्व की रचना नहीं दे पाते। यह नितान्त स्वाभाविक है कि जिनके मस्तिष्क महान विचारों से परिपूर्ण होते हैं, उन्हीं की वाणी से उदात्त शब्द झंकृत होते हैं। प्राचीन ग्रीक विद्वान लोंजाइनस ने प्रस्तुत काव्यगत औदात्य की मीमांसा करते हुए यह स्पष्ट किया है कि महान साहित्यकर शाश्वत साहित्य की रचना करते हैं। पंकज बिष्ट ने भी अपनी रचनाओं में शाश्वत मूल्यों को बनाये रखा है। उन्होंने अग्रेजी साहित्य का अध्ययन, हिन्दी साहित्य में लेखन तथा पत्रकारिता में विशिष्ट योगदान दिया है। उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति का ही परिणाम है कि उन्हें धर्म, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, राजनीति, समाज की पूर्ण समझ है। उनका साहित्य यथार्थवाद के धरातल पर परस्पर विरोधी विचारधाराओं यथा परम्परा तथा प्रयोग, संस्कृति तथा आधुनिकता, समाज तथा व्यक्ति, धर्म तथा विज्ञान, प्राचीन तथा नवीन, जीवन बोध में सामन्जस्य एवं समन्वय स्थापित करता है। पंकज जी की प्रथम कहानी 1967 में प्रकाशित हुई थी तब से अब तक उनके सात कहानी संग्रह 'पन्द्रह जमा पच्चीस '(1980), 'टुण्ड्रा प्रदेश और अन्य कहानियाँ' (1982), 'बच्चे गवाह नहीं हों सकते' (1985), 'खण्डित अभिमान' (1990), 'समारोह' (1995), 'चर्चित कहानियाँ' (1996), 'आखिर क्या हुआ' (1997) प्रकाशित हुए हैं। उपर्युक्त सात कहानी संग्रह के अतिरिक्त उनका प्रथम कहानी संग्रह 'अंधेरे से' (1976) में असगर वजाहत के साथ संयुक्त रूप से प्रकाशित हुआ था। कहानियों के अतिरिक्त उनके तीन बहुचर्चित उपन्यास 'लेकिन दरवाजा' (1982), 'उस चिड़िया का नाम' (1989) तथा 'पंखवाली नाव' (2009) तथा एक बाल उपन्यास 'गोलू-भोलू'(1985) मे प्रकाशित हो चुका है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन्हीं रचनाओं में झलकते पंकज बिष्ट के परिवेश को समझने का संक्षिप्त प्रयास किया गया है।

व्यक्तित्व शब्द को परिभाषित करना कठिन है। इसे व्यक्ति के गुणों तथा प्रवृत्तियों का संगठन कहा जा सकता है। नारमन एल. मन ने व्यक्तित्व की परिभाषा देते हुए कहा ''वह एक संयोजन, सम्मिलन, विलयन, और संगठित पूर्णता है, जिसमें विशिष्ट क्रियाएं अपनी अन्विति को एक सम्पूर्ण प्रतिभा में मुक्त करती हैं। व्यक्ति की बाह्य रचना-व्यवहार की चित्तवृत्तियाँ, रूचियाँ, धारणाएँ, शक्तियाँ, योग्यताएँ और कुशलताएँ सब का सर्वाधिक लाक्षणिक समायोजन व्यक्तित्व की परिभाषा हो सकती है।[1] किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विश्लेषण का अर्थ है- उसके गुणों, रूचियों, व्यवहारों, क्षमताओं एवं अभिवृत्तियों, जो उसे अनुवांशिक रूप से तथा परिवेश से प्राप्त होती हैं, का अध्ययन करना। व्यक्तित्व इस सबकी संगठित एकता का नाम है। अत: लेखन का केन्द्र व्यक्तित्व होता है और व्यक्तित्व का वैशिष्ट्य ही लेखन में झलकता है। व्यक्तित्व निश्चितरूपेण व्यक्ति के परिवेश से निर्मित होता है। परिवेश का तात्पर्य है व्यक्ति के चारों और का वातावरण। यह वातावरण परिवार, समाज, राजनीति, धर्म और संस्कृति आदि घटकों से मिल कर बनता है। हर प्रकार का माहौल न सिर्फ व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है वरन् उसके लेखन को भी निश्चित रूप से प्रभावित करता है। अत: यह स्वाभाविक ही है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माणकारी घटक अर्थात् उसके परिवेश का अध्ययन उसके लेखन के सन्दर्भ में किया जाय।

समाज की संश्लिष्टता-जटिलता के फलस्वरूप समाज के भीतर-बाहर घटने वाली घटनाओं

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

पंकज बिष्ट के लेखन में प्रतिबिंबित उनका परिवेश: एक अवलोकन

अमिता प्रकाश

सहा0 अध्यापिका, रा0बा0इ0 कालेज, द्वाराहाट, अल्मोड़ा

www.shodh.net

एवं क्रिया-प्रतिक्रिया के फलस्वरूप लेखक के अभ्यान्तर का निर्माण होता है, जो पुन: उसके साहित्य में अभिव्यक्त होता है।

आजादी से छ: माह पूर्व जन्म लेने वाले पंकज बिष्ट ने आज तक के सूचना क्रान्ति के समाज को देखा परखा एवं जिया है। सन् 1947 तक भारतीय समाज का एक मात्र लक्ष्य था 'आजादी', किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् धीरे-धीरे सामाजिक मूल्यों का जो अवमूल्यन हुआ उससे परंपरागत भारतीय समाज को, उसकी आस्था विश्वास एवं नैतिकताओं को गहरी क्षति पहुँची। पंकज जी ने बीसवीं शदी के पाँचवे दशक से लेकर इक्कीसवीं सदी तक के समाज को जिया है जो उनके साहित्य में समय-समय पर उद्घटित होता है। सामाजिक परिवर्तनों के संबंध में उनकी चिन्ताओं को उन्हीं के शब्दों से समझा जा सकता है। पंकज जी ने अपने निबंध संकलन 'शब्दों के घर' में 'समाज' खण्ड के अन्तर्गत समाज में बढ़ती विद्रूपताओं का उल्लेख किया है। ''जो समाज हम बना रहे हैं'' निबन्ध में समकालीन पूँजीवादी व्यवस्था के अन्तर्विरोधों की ओर संकेतित करते हुए वे लिखते हैं- ''असल में पूँजीवादी विकास जिस तरह से अलगाव को पैदा करता है, उसमें व्यक्ति का निजी संसार सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है, जिसमें भौतिक चीजें उसकी शारीरिक ही नहीं भावनात्मक जरूरतें भी पूरी करने लगती हैं।''[2] इस प्रक्रिया में समाज का परंपरागत ढाँचा टूटता है और नए संबंधो की निर्मिति प्रारम्भ होती है। फलत: नगरीकरण एवं विभेद और पलायन की अजीबो गरीब समस्याएँ उत्पन्न होती है, आदमी की संवदेनहीनता बढ़ने लगती है।

पहाड़ का जीवन अत्यन्त कठिन है। प्रकृति मानो सदा ही यहाँ के लोगों की परीक्षा लेती रहती है। कोई भी संवेदनशील मन इस परिस्थिति से द्रवित हुए बिना नही रह सकता। पहाड़ी समाज की निर्धनता, पलायन, भौगोलिक और आर्थिक कष्टों ने पंकज विष्ट को भीतर तक उद्वेलित किया। ''उस चिड़िया का नाम'' में पलायन की समस्या को बहुत ही सहज शब्दों में उकेरते हुए वे लिखते हैं-''ये पहाड़ है! हमारा तो यह रोज का किस्सा हुआ। ये तो लकड़ी की बात है, अब तो ये नौबत है कि मुर्दा ले जाने वाले ही नहीं मिलते।''....''एक चौथाई परिवार गाँव छोड़ गए हैं, और जिनके दरवाजे अभी भिड़े नहीं हैं पूरी तरह तो उनके परिवार के जवान मैदानों में हैं ।''[3] पलायन की भीषण ता को इंगित करता यह वक्तव्य ग्रामीण समाज में उपस्थित बेरोजगारी, षिक्षा, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं के अभाव का अप्रत्यक्ष चित्रण करता है जिसकी वजह से सारे गाँव खाली हो गये हैं। लेकिन जिन शहरों की ओर पलायन हुआ है, वहाँ की स्थिति और भी अधिाक भयावह है। इसी प्रसंग में 'उस चिड़िया का नाम' की मुख्य पात्र रमा की सोच शहरों की स्थिति को ज्यादा अच्छी तरह स्पष्ट कर देती है-'' शहरों में उसने एक आधा बार देखा है कि अर्थी को दो एक आदमी ले जा रहें हैं.....चारों ओर इतने आदमी हैं पर एक आदमी का सम्मानपूर्वक अन्तिम संस्कार करने को सिर्फ दो या चार आदमी ही रहे हैं। ये दृश्य उसे आदमी का अकेलापन, उसकी असहायता और आदमी की आदमी के प्रति तटस्थता का उदाहरण लगता''।[4]

वास्तव में पंकज जी ने सीधे-सादे ग्रामीण से लेकर महानगरीय समाज को देखा एवं परखा है। दोनो समाजों में जहाँ जाति, धर्म, लिंगभेद आदि की समानताएं हैं तो कई भिन्नताएं भी हैं। दोनों ही समाजो ने नैतिक अवमूल्यन, अनास्था, स्वार्थ, भाई-भतीजावाद, जातिगत भेदभाव, धर्म के नाम पर कई प्रकार की लूट, अफसरशाही, भ्रष्टाचार आदि को झेला है। समाज (इसको प्रश्न की तरह देख कर विस्तार से लिखा जाना चाहिए) बड़े संयुक्त परिवारों का स्थान छोटे परिवार लेने लगे- ''संयुक्त परिवार के टूटने के बाद हमारा समाज कोई कारगर सामाजिक कल्याणकारी व्यवस्था बना पाने में असफल रहा है। उल्टा जो कुछ था उसे भी उदारीकरण के नाम पर खत्म किया जा रहा है।[5] पति पत्नी के सम्बन्धों को पुन: परिभाषित करने की आवश्यकता पड़ने लगी है। एक ओर जनसंख्या का भीषण विस्फोट, दूसरी ओर टूटते बिलखते सामाजिक सन्दर्भ। आज इन्सान का जीवन इन्हीं परिस्थितियों की मार से टूटकर बिखरता जा रहा है। (दोहरी मार)अर्थ तन्त्र एवं समाज तन्त्र के बीच झूलते मानव की स्थिति बड़ी ही दयनीय हो गई है। उपभोक्तावादी समाज मे बढते टेलीविजन के प्रभाव से पंगु होती मनुष्य की वैचारिक क्षमता के प्रति एक सजग चेतावनी और चिन्ता की रेखाएं 'बच्चे गवाह नही हो सकते' जैसी कहानी मे देखते को मिलती है। यूं तो हर रचनाकार की रचनाएं अपने युग बोध का ही परिणाम होती हैं किन्तु कुछ एसे भी सर्जक होते हैं, जो आज के साथ साथ बीते कल और आने वाले कल का भी आकलन कर लेते हैं। वे लिखतें हैं- ''टी0वी0 का सर्वव्यापी और सर्वग्राही दानव हमें चिन्तन-क्षमता से रहित, सतही संस्कारविहीन दर्शक में बदल डालेगा...। इसके महाद्वीपीय सीमा को लाँघते पंजे हमारी हजारों साल पुरानी संस्कृति को घास-फूस की तरह रौंदते चले जा रहे हैं।''[6]

पंकज जी ने युगीन राजनैतिक सामाजिक पृष्ठभूमि में जनसाधारण की स्थिति को गहराई से देखा एवं महसूस किया है। वह स्वयं मध्यवर्गीय विसंगतियों के भुक्तभोगी कलाकार हैं। अत: युगीन चेतना अपने समग्र प्रभाव के साथ पंकज जी की रचनाओं में अभिव्यक्त हुई है। 'हल', 'समारोह', 'बच्चे गवाह नहीं हो सकते', 'खिड़की', 'कुंजरो वा', जैसी कहानियाँ उनके तीनों उपन्यास 'उस

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

पंकज बिष्ट के लेखन में प्रतिबिंबित उनका परिवेश: एक अवलोकन

अमिता प्रकाश

सहा0 अध्यापिका, रा0बा0इ0 कालेज, द्वाराहाट, अल्मोड़ा

www.shodh.net

चिड़िया का नाम', लेकिन 'दरवाजा' तथा 'पंखवाली नाव' एवं उनके निबन्ध संकलनों ''शब्दों के घर'' तथा ''कुछ सवाल कुछ जवाब'' अपनी सारी समर्थता में युग की परिस्थितियों के प्रभावों, क्रिया-प्रतिक्रियाओं को गहन संवेदनात्मक स्तर पर अभिव्यक्त करते हैं।

पंकज बिष्ट जी ने अपने बाल्यकाल एवं किशोरावस्था में राजनैतिक उथल-पुथल को देखा । राजनीतिक विचारधाराओं को बदलते, सुदृढ़ होते और साथ ही उनमें होने वाली गिरावट को देखा। आजादी के बाद से अब तक राजनैतिक क्षितिज पर कई व्यक्तित्वों का अभिर्भाव और अस्तगमन हुआ है। भारत समाजवादी, गुटनिरपेक्षता एवं उदारवादी, पूँजीवादी व्यवस्थाओं के दौर से भिन्न-भिन्न चरणों में गुजरा है। कई विदेशी युद्ध एवं आन्तरिक संघर्षों को इसने झेला है। आज के राजनैतिक परिदृश्य में जहाँ आतंकवाद एक सबसे बड़ी चुनौती है, वहीं साम्प्रदायिक और गैरसाम्प्रदायिक विचारधाराओं का टकराव हैं, जो वाह्य रूप से गहन लगता है, किन्तु वास्तव में उथला ही है। क्योंकि आज का नेतृत्व विचारधारा या सिद्धांतों का प्रतिबद्ध नहीं रह गया है। वे प्रतिबद्ध है अपने स्वार्थों के प्रति। जहाँ लाभ या स्वार्थ सिद्धि नजर आ रही हो, उसी दिशा या दल में सम्मिलित होने में किसी भी नेता को कोई संकोच नहीं है। अत: यह कहना अत्युक्ति नही होगी कि राजनैतिक रूप में यह काल राजनैतिक मूल्यों के क्षरण काल हैं और इस क्षरण को पंकज जी ने अपने लेखन में जोरदार ढंग से उठाया है। निठारी कांड के सन्दर्भ में उनकी यह उक्ति 'हमारी व्यवस्था इस हद तक सड़ गयी है कि जो कानून-व्यवस्था के लिए जिम्मेदार हैं वही आँखें दिखा रहे हैं.....। हर कोई उन जवाबदेहियों से बच रहा है जिनके तहत वह पकड़ में आ सकता है। झूठ बोलने, डीगें हाँकने और पाखण्ड का दौर चरम पर है। संसदीय राजनीति अपनी गिरावट के निकृष्टतम् स्तर पर पहुंच गयी है। सत्ता हथियाने के लिए कोई भी कुछ भी करने को तैयार है[7], ''खिड़की'' कहानी वर्तमान राजनीति का यथातथ्य चित्रण करती है। इसमें लेखक ने जिस प्रकार मंत्री, सचिव का चित्रण किया वह वास्तव में आज की राजनीति का घिनौना किन्तु वास्तविक चित्र है। 'कवायद' तथा 'खोखल' कहानियों में आपातकाल के दौरान आम नागरिक पर हुई ज्यादतियों का चित्रण लेखक ने बड़ी संजीदगी और बिलकुल नये अन्दाज में किया है। आपातकाल के समय स्वतंत्रता के अधिकारों के हनन को लेखक ने प्रतीकात्मक रुप में कुछ इस तरह चित्रित किया है-''मैं उस मूर्ति को देखने गया था। 'स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी' को। मैं उसके ऊपर खड़े होकर मानवता की स्वतंत्रता के संबंध में एक वक्तव्य देना चाहता था, जो मैंने बड़ी मेहनत से तैयार किया था और उसमें दुनिया के हर महापुरुष, दार्शनिक और लेखक के विचारों को उद्धृत किया था।...मैंने दम मारा और हौले-हौले वक्तव्य को पढ़ रहा था कि न जाने कैसे बिजली चली गई और चारों ओर भयंकर अन्धकार फैल गया। लोग इस तरह चीखने चिल्लाने लगे मानो उन्हें बेतरह कोड़ों से पीटा जा रहा हो। मुझे लगा की मेरा दम घुट रहा है और मूर्ती का खोखल धीरे-धीरे सिमटता हुआ मेरे चारों ओर बिल्कुल मेरी चमड़ी से आ लगा है। मुक्ति की ताजा और शीतल हवा की जगह मुझे मौत की सी ठंड ने घेर लिया।''[8] 'मोहेंजोदड़ो' कहानी में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अमेरिका के वर्चस्व को उन्होंने रावण को आदर्श मानने वाली वर्तमान पीढ़ी के सन्दर्भ में रेखांकित किया है, जो मात्र शक्ति की उपासना करती है।

राजनैतिक रूप से कम्युनिष्ट विचारधारा के पोषक पंकज बिष्ट ने राजनीति में आई गिरावट को कहीं स्पष्ट रूप से तो कहीं कटाक्ष के माध्यम् से अपने साहित्य में स्थान दिया है। कम्युनिष्ट या वामपंथ के सिद्धान्तों 'समानता, भ्रातृत्व एवं स्वतंन्त्रता' के पोषक पंकज बिष्ट भारतीय कम्युनिष्ट पार्टियों एवं उनके नेतृत्व में आये चारित्रिक पतन को बेबाकी से रखते हैं। 'संसदीय वामपंथ का संकट' नामक अपने लेख में वे लिखते हैं- वामपंथी नेतृत्व में दृष्टि के अभाव ने इस समस्या को और गम्भीर बना दिया है। वह सोच पाने की स्थिति में नहीं है कि एक पूंजीवादी व्यवस्था में विकास का उसका मॉडल क्या हो। घोर वामपंथी असफलता के और भी आयाम हैं। इनमें कुछ विशेष कर जातिवादी समानता और अल्पसंख्यकों का दरकिनार किया जाना अक्षम्य है।[9] पंकज जी ने राजनीति के हर पहलू, हर मुखौटे को बहुत करीब से देखा एवं समझा है, तथा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों रूप से अपनी लेखनी का विषय बनाया है।

बीसवीं सदी के पांचवे दशक से लेकर अब तक यद्यपि धर्म में विभिन्न बाहरी परिर्वतन आये है किन्तु आन्तरिक रूप से अभी भी व्यक्ति का मन धर्म के प्रति आस्था से नत है। पंकज जी जगह-जगह पर अपनी माता की धार्मिकता की चर्चा करते हैं। वे कहते है-माँ बहुत पढ़ी लिखी नही थी, किन्तु हमें बचपन से रामायण, महाभारत की कहानियाँ सुनाया करती, रामचरितमानस का पाठ उनकी दैनिकचर्या में था। पारिवारिक रूप से एक धार्मिक मान्यताओं एवं आस्थाओं वाले परिवार में जन्में पंकज जी की धर्म के प्रति आस्था संस्कारगत है। पंकज बिष्ट लिखित ''उस चिड़िया का नाम'' उनके धर्म एवं धार्मिक ज्योतिष ग्रन्थों के प्रति रूझान को स्वाभाविक रूप से प्रदर्शित करता है। 'उस चिड़िया का नाम' में वे हिन्दू धर्म के प्रति अपनी आस्था को इन शब्दों में व्यक्त करतें हैं-''हिन्दू धर्म एक बहुत ही विकसित धर्म है-हर चीज़ में एक तार्किकता है, दर्शन है, कारण हैं और हैं उनके

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

पंकज बिष्ट के लेखन में प्रतिबिंबित उनका परिवेश: एक अवलोकन

अमिता प्रकाश

सहा0 अध्यापिका, रा0बा0इ0 कालेज, द्वाराहाट, अल्मोड़ा

www.shodh.net

उत्तर।...किन्तु इस दुनिया में कोई भी चीज़ शाश्वत नहीं है। वे परम्पराएँ जो अपनी संगति, अपनी प्रासंगिकता, अपना अर्थ खो चुकी हैं, उनको त्यागना भी एक समाज सेवा ही है। गलत परम्पराओं को बढ़ाना...समाज के साथ धोखा है।''[10] यही नही यत्र-तत्र उनके लेखन में आये गीता के श्लोक, रामचरितमानस की चौपाईयाँ उनके हिन्दू धर्म एवं उसके ग्रन्थों के प्रति आस्था को प्रकट करते हैं। वे धर्म के ज्ञान वान तार्किक पक्ष को महत्त्व देते हैं किन्तु धर्म की सड़ी-गली और पुरातनपंथी बातों को बड़ी ही दृढ़ता के साथ न केवल नकारते हैं बल्कि उनका खण्डन भी करते हैं। 'धर्म की प्रासंगिकता' नामक अपने सम्पादित ग्रन्थ के सम्पादकीय में धर्म के स्वरूप एवं आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकि से परिपूर्ण समाज में धर्म एवं उसकी उपादेयता के बारें में वे लिखते है कि- ''सभ्यता के विकास में धर्म ने जो भूमिका निभाई है उसके महत्त्व से इन्कार नहीं किया जा सकता है पर आज के सन्दर्भ में जबकि मानव विकास के ऐसे मोड़ पर पहुँच चुका है जहाँ उसने धर्म को उसके लगभग सभी परम्परागत दायित्वों से मुक्त कर दिया है या उनका विकल्प तलाश लिया है, हमारा समाज क्या धर्म की भूमिका को लेकर एक-रूढ़ अप्रासंगिक संकीर्ण नजरियें से ग्रस्त नहीं नजर आता है।''[11] आज के तकनीकी युग में जब धर्म के बन्धन शिथिल हो गये हैं और व्यक्ति तार्किकता के आधार पर धार्मिक मान्यताओं एवं कर्मकाण्डों को चुनौती दे रहा है, तो उससे भी वे भली भाँति परिचित है, और उसे उचित ही ठहराते हैं। 'कुछ सवाल कुछ जवाब' नामक निबन्ध में वर्तमान धर्म के स्वरूप को स्पष्ट करते वे लिखते हैं 'धर्म अचानक अपनी चेतना में प्रतिगामी नहीं है। वह तार्किक और वैज्ञानिक इसलिए नहीं हो सकता क्योकि वह अपनी बनावट और उपयोगिता दोनों में आदिम है और आधुनिक होते ही उसका आधार खिसक जाता है। उदाहरण स्वरूप ''आस्था'' धर्म का बड़ा गुण है पर ''रेशनलिटि'' और सवाल उठाना आधुनिक चेतना का आधार है जिसके बिना प्रगति असंभव है।''[12]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पंकज बिष्ट का धार्मिक परिवेश ऐसा है जिसमें एक ओर तो व्यक्ति अपने संस्कारों के कारण धर्म एवं आस्था से बिलग नहीं हो पा रहा है, दूसरी ओर आधुनिक चेतना, वैज्ञानिक सोच एवं तार्किक बुद्धि से ही धर्म की पुरातनपंथी एवं विकास में बाधक बनने वाली रूढ़िवादी परम्पराओं का पुरजोर विरोध करता है।

अर्थ व्यक्ति के जीवन का अहम् पहलू है। आज के भौतिकवादी युग में तो अर्थ वास्तव में जीवन का सर्वोपरि न सही एक महत्त्वपूर्ण अंग है। पंकज बिष्ट एक मध्यम वर्गीय परिवार से सम्बन्ध रखते हैं। उनके पिता श्री शेर सिंह बिष्ट जी एक अक्खड़ तथा घुमक्कड़ प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनका समस्त जीवन एक के बाद दूसरे व्यवसाय को अपनाने में व्यतीत हुआ। पत्रकारिता, अभिनय राजनीति और अन्ततः सम्पादन जैसे व्यवसायों को अपनाकर उन्होंने अपने आठ बच्चों वाले परिवार का भरण पोषण दिल्ली जैसे महानगर में रहकर किया, जिससे यह अनुमान लगाना बहुत कठिन नहीं है कि पंकज जी का बाल्यकाल एवं किशोरावस्था वैभव के बीच नहीं बीता। पंकज जी ने आजादी के बाद गरीब फटेहाल भारत को देखा है तो आज एक उभरती हुई सशक्त अर्थव्यवस्था के रूप में भी वह भारत को देख रहें हैं। उदारीकरण एवं पूंजीवाद के बढ़ते कदम उन जैसे वामपंथी प्रबुद्ध वर्ग को कभी रास नहीं आये हैं किन्तु यह भी वह मुक्त हृदय से स्वीकारते हैं कि वर्तमान विश्व में उदारीकरण के बिना विकास संभव भी नहीं है। उनकी एक मात्र चिन्ता समाज के उन दबे कुचले लोगों के प्रति है जो उदारीकरण के इस दौर में और अधिक कगार पर पहुंच गये है या धकेल दिये गये हैं। 'क्या कृषि इतनी गैर जरूरी है?' 'जो समाज हम बना रहे है', 'हल्ले की संस्कृति का समाज' जैसे निबन्धों तथा 'हल' जैसी कहानियों में उनकी यह चिन्ता रेखांकित की जा सकती है। 'जो समाज हम बना रहे हैं' में वह लिखते हैं- 'साफ बात है पूंजीवादी मूल्य व्यवस्था, जिसे लादने पर हमारा शासन वर्ग आमादा है,'[13] एक अर्धविकसित और परम्परागत समाज में यथावत् नहीं लागू हो सकती और इसका कारण वह अपने दूसरे निबन्ध 'अपराध का सामाजिक सन्दर्भ' में बताते हुए वह कहते हैं -'रोजगार के बिना वैकल्पिक व्यवस्था के उस खेती से जिस पर देश की 70: जनता निर्भर है, लोगों को रातोंरात हटाना कितना खतरनाक होने जा रहा है, यह अपराधिक घटनाएं उसी का संकेत है। जिस तरह से देश भर में विशेष आर्थिक क्षेत्र बनाए जा रहे हैं और संसाधनों की तलाश में बड़े-बड़े कृषि व जंगल के क्षेत्रों को बहुराष्ट्रीय व राष्ट्रीय कंपनियों द्वारा कब्जाया जा रहा है उससे जो बेरोजगारी और हताशा पैदा हो रही है वह किसी को शांति से नहीं रहने देगी।'[14] अपनी कहानियों में पंकज बिष्ट ने असमानता, बेराजगारी, पूंजीवाद के बढ़ते खतरे एवं समाज पर होने वाले घातक प्रभावों को गम्भीरता से चित्रित किया है। 'दुर्गन्ध', आवेदन करो','मोहनराम (दास) आखिर क्या हुआ' 'टुण्ड्रा प्रदेश' जैसी कहानियाँ इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् यद्यपि भारत ने अपनी राजनैतिक नीति, विदेश नीति, औद्योगिक नीति या आर्थिक नीति तय की, किन्तु शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में हम पश्चिमी देशों के अनुयायी मात्र बनकर रह गये हैं। पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव हमारे खान-पान, रहन-सहन जीवन-शैली या कहें तो जीवन के हर क्षेत्र में दिखाई पड़ता है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

पंकज बिष्ट के लेखन में प्रतिबिंबित उनका परिवेश: एक अवलोकन

अमिता प्रकाश

सहा0 अध्यापिका, रा0बा0इ0 कालेज, द्वाराहाट, अल्मोड़ा

www.shodh.net

पंकज जी ने अपना बाल्यकाल उत्तराखण्ड की पहाड़ी संस्कृति के बीच व्यतीत किया है जिसका असर उनकी विभिन्न कहानियों यथा-'हल', 'आखिरी पहर' तथा उनके द्वितीय उपन्यास ''उस चिड़िया का नाम'' में स्पष्ट परिलक्षित होता है। पहाड़ी समाज के रीति-रिवाजों परम्पराओं धारणाओं एवं मिथकों का इस उपन्यास में बहुत ही स्पष्ट चित्रण किया गया है। पंकज जी का जन्म भारत की आर्थिक राजधानी एवं वर्तमान में विश्व के विशालतम् महानगरों में से एक मुम्बई में हुआ और उनकी किशोरावस्था से लेकर वर्तमान तक वह दिल्ली जैसे महानगर में रह रहें हैं। तो यह कहना कि महानगरीय संस्कृति एवं समाज ने उनके लेखन को जितना अधिक प्रभावित किया है, उतना पहाड़ी जीवन या संस्कृति ने नहीं उचित ही है। महानगरीय जीवन शैली एवं संस्कृति को व्याख्यापित करता उनका उपन्यास ''लेकिन दरवाजा'' न सिर्फ महानगरीय जीवन को इसके विविध स्वरूपों में रखता है वरन् समकालीन साहित्यिक और सांस्कृतिक जगत का एक हद तक दस्तावेज भी कहा जा सकता है। 'पंखवाली नाव' में छोटे शहरों की नियति जो महानगरों की परछाई मात्र बनकर रह गयें हैं, को लखक ने गहरी संवेदना के साथ व्यक्त किया है।

कोई भी रचनाकार अपनी रचना में पूरी तरह तटस्थ नहीं रह पाता है। पंकज बिष्ट यथार्थवादी लेखक हैं और अपने से अधिक भोगा हुआ प्रमाणिक यथार्थ उन्हें कहाँ से मिलता। फलत: उनके पूरे साहित्य सृजन में उनके व्यक्तित्व एवं परिवेश का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

सन्दर्भ सूची:-

1.नारमन एल0 मन0, 'साइकोलॉजी' द्वितीय संस्करण, पृष्ठ सं0 569
2.पंकज बिष्ट, 2009, 'शब्दों के घर', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0 150
3.पंकज बिष्ट, 2005, 'उस चिड़िया का नाम', राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0 21
4.वही-
5.पंकज बिष्ट, 2008, 'कुछ सवाल कुछ जवाब', खुराना पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृष्ठ सं0 150
6.पंकज बिष्ट, 1986, 'बच्चे गवाह नहीं हो सकते ?', राधकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ सं0 7
7.पंकज बिष्ट, 2008, 'कुछ सवाल कुछ जवाब', खुराना पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृष्ठ सं0 44
8.पंकज बिष्ट, 1980, 'पन्द्रह जमा पच्चीस', तक्षशिला प्रकाशन, पृष्ठ सं0 110
9.पंकज बिष्ट, 2008, 'कुछ सवाल कुछ जवाब', खुराना पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृष्ठ सं0 27
10.पंकज बिष्ट, 2005, 'उस चिड़िया का नाम', राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0 64
11.पंकज बिष्ट, 2006, 'धर्म प्रासंगिकता के सवाल' समयान्तर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0 11
12.पंकज बिष्ट, 2008, 'कुछ सवाल कुछ जवाब', खुराना पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृष्ठ सं0 123
13.पंकज बिष्ट, 2008, 'कुछ सवाल कुछ जवाब', खुराना पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृष्ठ सं0 152
14.पंकज बिष्ट, 2008, 'कुछ सवाल कुछ जवाब', खुराना पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृष्ठ सं0 114